छ. शिवाजी महाराजका शासन धोरण और स्वतंत्र भारत के शासन धोरण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. स्नेहा प्रसाद पाटील एस. के. पाटील महाविद्यालय, कुरुंदवाड

अ) छत्रपती शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350 वर्ष

प्रस्तावना:-

भारत देश विस्तृत और व्यापक देश है। भारत का इतिहास समृद्ध और विविधता से परिपूर्ण है। भारत के इतिहास का विचार एवं अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि, प्राचिन काल से अनेक पाश्चात्योंने भारत पर आक्रमण किए। भारत को पराजित करके भारत पर राज्य किए। अधिकांश समय भारत परकीय आक्रमणों के निचे दबकर पीडित रहा था। भारत ने खुलकर साँसे लेना छोड ही दिया था। अनेक राजाओंने परकीय आक्रमणों का विरोध करने का काफी प्रयास किया था। इनमें मुख्यत: भारत में एकछत्री शासन निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य महान सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने किया। सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के पश्चात अनेक राजाओं ने भारत के भिन्न - भिन्न प्रांतो एवं राज्यों की स्वतंत्रता पर ध्यान दिया था। अत: इनमें सबसे महत्वपूर्ण भारत के दक्षिण महाराष्ट्र में जन्में छत्रपती शिवाजी महाराज ने 'स्वराज्य' का निर्माण करके महाराष्ट्र का इतिहास सुवर्ण पन्नों पर लिखा है। इ.स 17 ई. में शिवाजी महाराज के मध्ययुगीन समय के कार्य से महाराष्ट्र को नया जीवन मिला था। इस शोधपत्र के अंतर्गत छत्रपती शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350 वर्ष और स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक स्थिती का सारांश रुप में तुलनात्मक विवेचन निम्नांकित किया है -

1) परकिय आक्रमण:-

इ. स 17 वी शतक में भारतीय राजकारण में महत्वपूर्ण एक घटना घटीत हुई। मोगल साम्राज्य की निर्मिति सम्राट अकबरने अहमदनगर तक की। अकबर के कालखंड में मोगल साम्राज्य काबुल से बंगाल तक और कश्मीर से भीमा नदी तक फैलाया। ऐसा साम्राज्य फैलाकर वह भारत के दक्षिण भाग महाराष्ट्र तक पहूँच गया। इसी समय दक्षिण भारत में पाँच शाही सत्ताएँ निर्माण हुई थी। परंतू स्वराज्य निर्मिती के समय इनमें से सिर्फ आदिलशाही, निजामशाही और कुतुबशाही आदि तीन शासक बने रहे। इनमें बड़ी - बड़ी सत्ताएँ मुस्लिम शासकों के पास ही रहीं। 17 वे शतक के प्रारंभ में जाधव, निंबाळकर, भोसले, घाटगे और माने आदि मराठा सरदार अपनी सत्ता प्राप्त करने लगें।

भारत के इतिहास में 17 वे शतक अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सभी परकिय सत्ताओं से तंग हुए देश में नवचेतना निर्माण करने का कार्य शुरू होने लगा।

2) स्वराज्य संकल्पक शहाजी राजे:-

पिता मालोजीराजे की मृत्यू के पश्चात निजामशाह शहाजीराजे को वतनदारी दी।इ.स.1606 से इ.स.1624 तक शहाजीराजे निजामशाही में रहें। शहाजीराजें कई साल मोगलों के खिलाफ लढ़ते रहें। उन्होंने कई युद्धों में पराक्रम किए। बाद में उन्होंने आदिलशाह को साथ दिया। वहाँ वे इ.स.1625 से इ.स. 1628 तक रहें। फिर से उन्होंने निजामशाही में प्रवेश किया। परंतु परकियों की सेवा करते - करते वे थक गए थे। परकियों का प्रजा पर होनेवाला अन्याय - अत्याचार, शोषण और ऱ्हास देखकर वे अंदर से क्रोधित होते थे। उन्होंने मन में ठान लिया था कि स्वतंत्र स्वराज्य निर्माण करना ही होगा। जब - जब वे जिजामाता के पास आते थे। तभी अपने एकनिष्ठ सरदारों को इकट्ठा करके उन्हें स्वराज्य निर्माण करने के प्रति प्रेरित करते थे। परकियों की गूलामशाही नष्ट करने की भावना उनके मन में निर्माण करते थे। वे उन्हें कहते थे की, "जीवनभर जिस भूमी से मैने प्रेम किया है, वह परकियों से मुक्त होनी चाहिए। यहाँ अपना याने प्रजा (रयत) का राज्य निर्माण होना चाहिए।" उन्होंने गर्भवती पत्नी जिजाऊँ के मन में 'स्वराज्य' संबंधी बीज बोना शुरू किए। वे मुस्लिम साम्राज्य में कार्य तो करते थे परंतु बार - बार होनेवाले अपमान और शोषण से मुक्त होना चाहते थे।

(1) प्रा. एस. बी. माणगावकर - "शिवरायांचे प्रशासन व कल्याणकारी राज्य" पृ. 33

3) शिवाजी राजा का जन्म और जिजाऊ का स्वराज्य धोरण:-

शहाजी राजे के व्यक्तिमत्व पर मुस्लिम साम्राज्य का प्रभाव पडा था। लेकिन ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी उन्होंने अपनी 'स्वधर्म' और 'धर्मनिष्ठा' को बनाया रखा था। शिवबा के जन्म के पश्चात उनकी 'स्वराज्य' की इच्छा और प्रबल होने लगी। उन्होंने जिजाऊ को शिवबाकी परवरिश मावळ प्रांत के स्वतंत्र वातावरण में करने की सलाह दी थी। अपने सपनों को वे दानों पति - पत्नी शिवबा द्वारा पूरा करना चाहते थे। जिजाऊ ने भी जान लिया था कि परकीय गुलामी भयानक है। पति शहाजीराजे औ पिता लखुजी जाधव आदियों जैसी जिजाऊ भी पराक्रमी थी। शिवबा की परवरिश में जिजाऊ ने अपना पूरा जीवन बिताया। शिवबा की प्रेरणास्थान जिजाऊ रहीं। वह शिवबा को बचपन से शूरता और विरता के पाठ पढाती थी। शिवबा के दोस्तों को प्यार - मोहब्बत देकर उन्हें बचपन से युद्धनीति सिखाकर प्रोत्साहन देती रही। उनकी विरता का कौतुक करती थी।

वह शिवबा और उनके साथियों को नीतिपाठ पढाती थी। उच्च नैतिक मूल्यों को बताती थी। उन्होंने जीवन - मूल्यों को पवित्र समजने जानेवाली बातों का सम्मान करना सिखाया जैसे, स्त्री, पवित्र कुराण, मस्जिद, जनता, किसान आदियों के प्रति आस्था रखना सिखया। शिवबा के शौर्य और पराक्रम को जिजाऊने बढाकर उसको प्रोत्साहित किया। जिसका प्रभाव शिवबा के मन - मस्तिष्क पर बचपन पर पडा। जिजाऊंने उन्हें अन्याय और गुलामी के खिलाफ आवाज उठाकर लडना

सिखाया। स्त्री की रक्षा और आदर करना सिखाया। किसानों के अनाज को योग्य मुनाफा किस प्रकार देना चाहिए इसकी सिख दे दी। पति से दूर रहकर बेटेका पालन पोषण बडे साहस के साथ किया। शत्रूओं के प्रति प्रजा को सजग बनाया। उनकी मानसिकता गुलामी के खिलाफ आवाज उठाने की तैयार की। अपने बेटे के जैसी प्रजा का पालन - पोषण किया।

4) शिवराय कि धर्मनीति: -

छत्रपती शिवराय को सर्वधर्म समभाव की भावना उनके पूर्वजोंदवारा प्राप्त हूई थी। उनका व्यक्तिमत्व सर्वगुणसंपन्न रहा । वे बहुत प्यारे स्वभाव के रहें । साथ ही पराक्रम, नियोजन संघटन वृत्ती, बोलने का कौशल्य, समाजसेवा वृत्ती चारित्र्य संपन्नता, दूरदृष्टीकोण की भावना, न्यायव्यवस्था, पुरोगामी विचार आदि वातें उनमें थी । उनके साथीदारों में विभिन्न जाति - धर्म के लडके थे । वे एक आदर्श व्यक्ति और अच्छे सफल राज्यकर्ते बने । उन्हें अपने हिंदू धर्म के प्रति अधिक आस्था थी । लेकिन इसका अर्थ ऐसा नहीं होता है की उन्होंने अन्य जाति - धर्म पर प्रहार किए है । अन्य जाति - धर्म के प्रति भी उन्हें आदर था । इस संबंध में डॉ. इस्माईल हुसेनसाहेब पठाण लिखते है की " अपने धर्माभिमान के लिए उन्होंने कभी भी तलवार को हाथ में नहीं लिया । तात्विक और नैतिक विचारों को ही आधार दिया ।" (1) इस प्रकार हर जाति - धर्म के प्रति उनकी दृष्टी प्रगतिशिल रही।

धर्मनिती के साथ - साथ महाराज ने आध्यात्म, धर्मस्थळ और सद्गुरू पर अखंड श्रद्धा थी। उन्होंने धार्मिक इनाम देना शुरू किया था। इनके सैनिकों में जो पराक्रमी हो उसका सम्मान किया जाता था। इनमें मराठे, हेटकरी, ब्राम्हण, प्रभू, रामोशी, महार, मांग, कोळी, भंडारी और मुस्लिम जैसे विभिन्न जाती - धर्मीय योद्धा थे। इन सभी जाति - धर्मियों को लेकर महाराजने अपने स्वराज्य की संकल्पना सफल बनाई। लेकिन कभी उन्होंने अंधश्रद्धा को अपने मन और प्रजा में स्थान नहीं दिया।

5) शिवराय की खेती और किसानों के प्रति आस्था:-

भारत देश खेती - प्रधान देश है। इसिलिए शिवाजी महाराज ने खेती और किसान कि ओर अधिक ध्यान दिया। परकीय राज्यकर्ते किसानों की ओर से कर मार - पीठ करके लेते थे। वह बात महाराज को बिलकूल पसंद नहीं थी।

महाराज ने हिंदवी स्वराज्य अंतर्गत अनाज का कर मोगलोंसे कम लगाया। स्वराज्य में कर प्राप्त करने का काम सरकारी अधिकारी करने लगे।

साथ ही महाराज ने "वृक्ष लगाव, वृक्ष बढाव" के प्रति आज्ञापत्र तैयार किया। जंगल को उन्होंने अधिक महत्व दिया। किसानों के लिए उन्होंने कर्ज माफी का निर्णय लिया। उनका विचार था की खेती द्‌वारा जनता की ही प्रगति या विकास किया जाए।

महाराज ने स्वराज्य के विकास के लिए उद्योगों की ओर अधिक ध्यान दिया। उद्योग में विकास करने हेतू उन्होंने जहाज को महत्व दिया। जहाज तैयार करने का काम अपनी प्रजा के वारली, सुतार और भंडारी जैसे मागासवर्गीय लोगों को दिया। ताकी उनका पेट भरे और विकास हो जाए। भारत का विकास ध्यान में रखकर महाराज ने चौल, कल्याण, भिवंडी, राजापूर, वेंगुर्ला, संगमेश्वर, विजयदूर्ग और बांद्रा आदि से व्यापार शुरू किया। व्यापार में आर्थिक व्यवहार तोडा, हुंडी और वरात द्वारा किया जाने लगा।

6) शिवराय का स्त्री - विषयक दृष्टिकोन:-

माता जिजाऊने शिवराय को सर्व प्रथम स्त्रियों का आदर और सन्मान करना सिखाया। उस कालखंड में स्त्री को हीन माना जाता था। स्त्री बिलकुल सुरक्षित नहीं थी। दिन - रात उसको भोगने में राजा, राजपुत्र, सरदार, वतनदार, जमीनदार, देशमुख और देशपांडे अपनी शान समझते थे। वह स्त्रियोंपर अन्याय - अत्याचार करते थे। जिनसे न्याय मांगना था वही अन्याय करते थे। शिवराय भी एक राजा होते हुए उनका चरित्र साफ था। बचपन से उन्हे जिजाऊ ने स्त्री का जीवन में क्या महत्व है?यह शिक्षा दी थी। शिवराय सिर्फ अपने प्रांत की स्त्रियों को अपनी माता - बहन समझ कर उनका आदर करते थे। इस संबंधी प्रा. डॉ. श्रीकृष्ण महाजन लिखते है कि, "सिर्फ स्वधर्मीय नहीं तो सभी धर्म की स्त्रियों का अपमान न करते हुए उन्हे एक मनुष्य समझकर आदर किया जाए ऐसी भावना उनकी थी। (1) स्त्री - विषयक यही उदात्त भावना जिजाऊ के कारण शिवराय में निर्माण हुई थी।"

युद्ध के समय अगर कोई स्त्री हाथ लगी तो उसे माँ - बहन समझकर उसका सम्मान करके उसे उसकी जगह पर सुरक्षित पहुँचाया जाता है। स्त्री को माता ऐसे समझने का कानून उन्होंने बनाया था। स्त्री के प्रति शिवराय अत्यंत न्यायी रहते थे। चाहे रांझ्या का पाटील हो, सावित्रीबाई देसाई, गोळयां की बहू, कल्याण के सुभेदार की बहू या हिरकणी का साहस हो इन सभी का आदर करके उन्हें उन्होंने समय - समय पर न्याय दिया।

7) दुर्ग और किलों का व्यवस्थापन:-

छ. शिवाजी महाराज को मालूम था की, अगर साम्राज्य या स्वराज्य निर्माण करना है तो सबसे पहले दुर्ग और किलों का व्यवस्थापन करना अनिवार्य है। उन्होंने पाश्चात्य आक्रमणोंका विचार करके किलों को ऐसे तैयार किया की शत्रूओं का वह किले जितने में तीन सौ साठ वर्ष की उम्र लग सकती थी। अनाजों को इकट्ठा करना और स्वराज्य को सुरक्षित रखने हेतू उन्होंने समुद्र में विजयदुर्ग, सुवर्णदुर्ग, पद्‌मदुर्ग, खांदेरी, उंदेरी, सिंधूदुर्ग आदि दुर्ग स्वयं अपने नजरों के सामने बनवाएँ थे। शत्रूओं को उनपर आक्रमण करके जितना मुश्किल होता था। कहाँ से आना है और कहाँ जाना हैं यही बातें उन्हें बिलकूल समझ में नहीं आती थी। पाश्चात्य विद्वानों ने भी शिवाजी महाराज के बुद्धि की प्रशंसा की है।

इसप्रकार एक ओर पाश्चात्य् शत्रू भारत के दक्षिण महाराष्ट्र पर आक्रमण पर आक्रमण करते रहें और दुसरी ओर छ. शिवाजी महाराज अपने स्वराज्य का विकास और विस्तार करते रहें। अत्यंत प्रतिकूल स्थिती में शिवाजी महाराजने अपने स्वराज्य कि निर्मिति की। जिसे पूरा भारत देश 350 वर्षों के पश्चात् भी भूला नही है और कभी भूलेगा भी नहीं।

(1) प्रा. डॉ. श्रीकृष्ण महाजन, "छत्रपती शिवरायांचा स्त्रीविषयक दृष्टिकोन" पृ. 10

ब) स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति स्थिती:-

प्रस्तावना:-

प्राचीन काल से भारत देश पर अनेक पाश्चातोंका आक्रमण होकर सत्ता रहीं। भारत अधिक समय के लिऐ पाश्चात्य अधिपात्य के निचे कुचलता रहा। अनेक राजा महाराजाओं ने देश स्वातंत्र्य के लिए प्रयास किए। इसमें उन्हें काफी सफलता भी प्राप्त हुई। छ. शिवाजी महाराज के समय अंग्रेजों ने कदम उठाने का कार्य शुरु किया। धीरे - धीरे भारत में अपने आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता उन्होंने स्थापित कि थी। पूरा भारत पारतंत्र्य में अपना स्वतंत्र्य अस्तित्व खो चुका था। खुलकर साँस लेना भारत का सपना था।

1) स्वातंत्र्य की संकल्पना:-

भारत में अनेक राजाओं ने अपने - अपने प्रांतों में अपनी विरता से 'स्वराज्य' का निर्माण किया था। लेकिन अब पूरे भारत को 'स्वराज्य' की आवश्यकता थी। ब्रिटीशोंने भारत में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' का निर्माण किया। जैसे - जैसे ब्रिटीशों का भारवासियोंपर अन्याय - अत्याचार बढ़ता गया वैसे - वैसे उनके प्रति भारतवासियों के मन में उनके प्रति क्रोध और तिरस्कार की भावना बढती गई। उनके अन्यायी शासन के विरोधी असंतोष पनपने लगा। सन 1857 ई. के संग्राम को देखे तो उसके पहले भारत में अनेक घटनाएँ घटित हुई थी। जैसे की 18 वीं सदी के अंत में

और उत्तरीय बंगाल में 'सन्यासी आंदोलन' हुआ था। बिहार और बंगाल में 'चुनार आंदोलन' करके अपना विरोध और असंतोष व्यक्त किया था। लेकिन ऐसे कई आंदोलन होने पर भी कुछ हासिल नहीं हुआ क्योंकि वे सिमित क्षेत्र तक ही रहें। परंतु जो पहला संघटित विद्रोह भडका वह सन 1857 ई. का था। यह विद्रोह राजनीतिक के कारण पनप गया। वह ब्रिटीश सरकार की 'गोद' संकल्पना नष्ट करने की थी। क्योंकि उनका प्रधान उद्देश्य रहा था कि पूरे भारतीय साम्राज्य को ब्रिटीश साम्राज्य में विलीन करना। इसके लिए उन्होंने अपने मुताबिक अपने नए - नए नियम बनाए। जैसे - किसी राज के निसंतान होने पर राज हडप करने की राजनिति से भारतीय राजाओं में बहोत असंतोष निर्माण हुआ था। राणी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र कोझाँसी की गद्दी पर बैठने के लिए काफी विरोध किया गया।

इसी राजनीति से ब्रिटिशोंने सातार, नागपूर और झाँसी की ब्रिटीश राज्य में विलिनीकरण किया। अत: इन घटनाओं के कारण भारतीय राजाओं में काफी डरावनी स्थिति निर्माण हो गई। उनका भी विलिनीकरण कुछ ही दिनों में होनेवाला था। दत्तक पुत्रों की पेंशन रोकी गई।

ब्रिटिशों के प्रति और विद्रोह निर्माण होने का और एक कारण रहा सामाजिक और धार्मिक। भारत में चारों और पश्चिमि सभ्यता अपना पैर फैला रही थी। सन 1850 ई. में ब्रिटिशोंने हिंदू धर्म पर प्रहार किया और ख्रिश्चन धर्म अपनानेवाला ही हिंदू अपने पूर्वजों के जायदाद का हकदार बनेगा ऐसा कानून तैयार किया। उन्होंने भारतीय परंपरागत प्रथाओं पर प्रहार करके भारतवासियों को नाराज किया। ब्रिटिशों में अधिकतम सैन्य भारतीय थे लेकिन उन्हें कम स्थान और वेतन देना शुरू किया। इसी कारण उनमें असंतोष निर्माण हुआ। सन 1855 ई. में लॉर्ड कॅनिन ने एक नियम तैयार किया। उनके मुताबीक सैनिकों को भारत के बाहर भी सेवा देनी पडती थी। सन 1857 ई. के बाद गाय और सुअर के मांस के अफवाओं के कारण अधिक विद्रोह पनप गया। 29 मार्च 1857 ई. को मंगल पांडे ने बैरखपूर छावणी में विद्रोह किया। अगर ब्रिटिश अफसरों ने इस विद्रोह को शांति से नियंत्रित किया। परंतु मंगल पांडे ने अपना कार्य शुरू रखा। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें फाशी की सजा हुई। मंगल पांडे की फांसी से भारत में ब्रिटिशों के प्रति अधिक क्रोध निर्माण हुआ। ब्रिटिशों के खिलाफ देश के कोनों - कोनों में आंदोलन शुरू हुए। लेकिन विद्रोह के लिए कई भारतीय राजाओं ने समर्थन नहीं किया। उनमें आंदोलन करने के प्रति सहयोग क्षमता, संघटन क्षमता की कमी थी। उनमें ठोस ध्येय और नियोजन का अभाव था। लेकिन ब्रिटिशों में कई कुशल सेना नायकों की टीम कार्यरत थी। जिनका सामना भारतवासी नही कर पाए। सन 1858 ई.वी में ब्रिटिश संसद ने 'ईस्ट इंडिया कंपनी' को नष्ट किया। इसके पश्चात् भारत पर शासन का पूरा अधिकार महाराणी व्हीक्टोरिया का रहा। ब्रिटिश सरकार की 'हडपनीति' को समाप्त किया गया। कानूनी वारस को गद्दी पर बिठाने का निर्णय हुआ। सन 1857 ई. के पश्चात् भारत स्वातंत्रता की लढाई का मार्ग निर्माण हुआ।

2) भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम:-

भारतवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रति सजग होने लगे। देश के कोनों - कोनों में स्वातंत्र्य संग्राम निर्माण होने लगे। अंग्रेजों ने जान लिया था कि भारतवासियों का यह पनपा हुआ असंतोष अब समाप्त नहीं होगा। इसी दौरान क्लीमेंट एटली पर के प्रधानमंत्री ने 20 फरवरी 1947 ई. को 'भारतीय स्वतंत्रता' की घोषणा की थी। साथ ही ब्रिटिश सरकारने घोषीत किया की 30 जून 1948 ई. तक हम भारत की स्वाधिनता भारतवासियों को देंगे। भारत को आजाद कर देंगे।

माऊंटबेटन योजना ने अपने मुख्य प्रस्ताव रखे उनमें पाकिस्तान और भारत को अलग - अलग किया गया। बंगाल और पंजाब का विभाजन किया जाएगा। उन्होंने 15 अगस्त 1947 ई. को भारत - पाकिस्तान को आजाद किया। इसिलिए इस दिवस को 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया जाने लगा।

3) सन 1947 से 2020 ई. तक स्वतंत्र भारतीय राजकीय इतिहास:

देश को स्वतंत्रता तो प्राप्त हो गई। लेकिन देश स्वतंत्र होने के पश्चात शीघ्र ही सन 1948 ई. को. म. गाधीजी की हत्या हुई। साथ ही काश्मिर की आजादी को लेकर भारत - पाकिस्तान में युध्द शुरू होने लगे। सरदार वल्लभभाई पटेलजी ने भारत के कोने - कोने में फैले सभी रियासतों को इकट्ठा करके एक ही 'भारत' देश के रुप में स्थापन किया। इसके पश्चात 26 जनवरी 1950 को भारतीय गणराज्य घोषित किया गया। साथ ही 26 जनवरी को 'भारतीय संविधान' प्रारित किया। सन् 1962 ई. में सीमा को लेकर भारत और चीन का युद्ध हुआ।

सन 1966 ई. में ताशकंद में प्रधानमंत्री लाल बहाद्दूर शास्त्रीजी के मृत्यु के पश्चात् इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी। इससे इंदिरा गांधीजी का दौर शुरू हुआ। सन 1971ई. में फिर भारत - पाक युद्ध हुआ। इसमें बांगला की स्थापना हुई। सन 1974 ई. को भारत में सफल भूमिगत परमाणू परिक्षण किया। सन 1975 ई. में इंदिरा गांधीजी ने आपात्काल की घोषणा की। इसका प्रधान उद्देश देश में फैला भ्रष्टाचार और बढती महैंगाई को रोखना था। सन 1979 ई. में जनता पार्टी का विभाजन हुआ। सन् 1980 ई. में फिर से काँग्रेस कि सत्ता निर्माण होकर इंदिरा गांधीजी प्रधानमंत्री बनी। आगे सन् 1984 ई. में इंदिरा गांधीजी की हत्या हुई और राजीव गांधी नए प्रधानमंत्री बने। सन् 1989 ई. में काँग्रेस की हार हूई। सन् 1991 ई. में राजीव गांधीजी की हत्या हुई। जब मनमोहन सिंह वित्त मंत्री बने तभी से देश में आर्थिक विकास शुरू हुआ।

सन 1992 ई. में बाबरी मस्जिद को विध्वंस हुआ। जिससे भारत देश का पूरा वातावरण अशांत हुआ था। सांम्प्रदायिक दंगे होने लगे। सन 1995 ई. में प. बंगाल के मुख्यमंत्री ने मोबाईल सेवा शुरू की। इन 50 वर्षों में भारत देश में छोटी - मोटी अनेक घटनाओं का निर्माण हुआ। जिसका परिणाम भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों पर पड़े बगैर नहीं रहा।

4) भारतीय संविधान निर्मिति:-

ब्रिटिशों के जाने से पहले स्वतंत्र संविधान की घोषणा हुई। स्वतंत्र संविधान सभा लेने का निर्णय लिया गया। इसी संविधान की मूल तत्वे, स्वातंत्र्य, समता और बंधुता बनाई गई। सभी भारतवासियों को सामने रखकर संविधान का निर्माण करना तय हुआ। इसके लिए अनेक विद्वान सल्लागारों का सल्ला लिया गया। अंत में सन 26 जनवरी 1950 से स्वतंत्र भारतीय संविधान शुरू हुआ। इससे भारत में लोकशाही गणराज्य का निर्माण हुआ। राजकीय पक्ष को स्विकारते समय हर पक्ष को इस संविधान की सर्वप्रथम शपथ लेनी पडती है। लेकिन सच बात तो यह है की इस संविधान को विरोध भी होता रहा। इस संबंधी कॉ. धनाजी गुरव लिखते है की, "जिस दिन संविधान स्विकारणे का निर्णय हुआ उसी दिन शाम को प्रकाशित होनेवाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के "पांचजन्य" नाम के प्रकाशन ने यह संविधान हमें मंजूर नही"। ऐसा वक्तव्य किया था।लेकिन म. गांधी, पं. नेहरू, पटेल और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे व्यक्तियों ने संविधान के लिए काफि प्रयास किए।

(1) कॉ. धनाजी गुरव, "लढून मिळवलेली लोकशाही टिकवण्यासाठी" पृ. 50

5) लोकशाही धोरण:-

भारत विशाल देश है। इसमें अनेक भिन्न - भिन्न जाति - धर्म के लोग रहते है। इनमें एकात्मकता निर्माण करने हेतु लोकशाही धोरण आयोजित किया। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य् और भारतीय विचारों का काफि प्रभाव पडा दिखाई देता है। इन्हीं बातों को ध्यान में लेकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजीने लोकशाही धोरण अस्तित्व में लाया। इस संबंध में सतीश सभरवाल लिखते है- "नागरी समाज की जो मूलभूत तत्वें है, उनसे जाति और धार्मिक समुदाय का संबंध स्थापित नहीं होता है।" (1) इसलिए भारत जैसे विशाल देश में लोकशाही आवश्यक है।

6) स्वतंत्र भारत और स्त्री - विषयक दृष्टिकोन:-

भारत देश को मातृसत्ताक पद्धति का प्राचीन इतिहास है। प्राचीन काल में स्त्री सारे निर्णय लेती थी। जैसे - जैसे पाश्चात्य् आक्रमण होते गए उसके वैचारिक स्वातंत्र्यता पर पाबंदी लगाई गई। परंतु देश स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्रों में उसका विकास होने लगा। उसक स्वातंत्र्य, कामकाज और रहन - सहन के लिए अलग से नियम तैयार किए गए। तभी से वह पुरूषों के कंधे से कंधा लगाकर प्रत्येक क्षेत्र में अपना अस्तित्व निर्माण करने लगी। अपने सभी अधिकारों के प्रति यह सजग हो गई। अपने अधिकारों के प्रति लढ़ने लगी।

(1) प्रकाश बाळ/किशोर बेडकीहाळ - "भारतीय राजकीय व्यवस्था" पृ. 163

क) छ. शिवाजी महाराजका शासन धोरण और स्वतंत्र भारतके शासन धोरण का तुलनात्मक अध्ययन:-

छत्रपती शिवाजी महाराज जीने 'स्वराज्य' निर्माण करने से पहले पूरा भारत देश पारतंत्र में था। भारत की अत्यंत दैनिय अवस्था थी। शिवाजी महाराज के मन - मस्तिष्क पर 'स्वराज्य' की संकल्पना को शहाजी महाराज और माता जिजाऊने प्रतिबिंबित करने का प्रयास जिजाऊ की गर्भावस्था से ही शुरू किया था। छ. शिवाजी महाराजजीने अपने अपने मावलों के साथ मिलकर स्त्री - शोषण, धार्मिक - जातिवाद, किसान महसूल की हानी और गो - हत्या जैसी कई विभिन्न बातों का प्रतिरोध किया था। छ. शिवाजी महाराजी की नीति के कारण द. भारत या भारत खुलकर साँसे लेने लगा। व्यक्ति

के व्यक्तित्व की एक अपनी अलग सी पहचान बन गई। सह्याद्री के पर्वत में सिर्फ जय शिवाजी, जय भवानी और हर हर महादेव का नारा दिन - रात गुंजने लगा था। पाश्चात्य आक्रमक अपनी दूम दबाकर भागने लगे थे। उन्होंने प्रत्येक अमावस की रात को ही अपनी हर मोहिम सफल करके जनता के अंधविश्वास को दूर किया। छ. शिवाजी महाराजी की मृत्यू के पश्चात् फिर से भारत पर पाश्चातोंने आक्रमण करना शुरू किया। भिन्न भिन्न प्रांतो के कई राजा - राणियों ने अपनी शक्तियों का प्रदर्शन उनके खिलाफ लड़कर किया। परंतु उसमें उन्ही कभी सफलता - असफलता का सामना करना पडा। 15 अगस्त 1947 ई. के देश के स्वतंत्र होने के पश्चात की तो भारतीय शासन प्रणाली अलगसी दिखाई देने लगी। देश तो स्वतंत्र हो गया परंतु अनेक पक्षों में बाँटा गया। छ. शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र स्वराज्य की जो संकल्पना सामने रखकर स्वराज्य निर्माण किया था। उसमें कई परिवर्तन होने लगे। क्योंकि सबमें स्वार्थ, दलबदल, वृत्ती पनपने लगी। प्रत्येक पक्ष अपना राजकिय इतिहास, पूर्व भूतकाल भुलकर, जातिवाद, धर्मवाद, प्रदेशवाद, भाषावाद, दारिद्रवाद, आतंकवादऔर जमातवाद का सहारा लेकर जनता को भावनाओं के साथ - साथ खिलवाड करने लगे। स्त्री - स्वातंत्र्य का नारा आसमान तक तो गुंजता रहा। परंतु स्त्री - शोषण किसी न किसी रूप में होता रहा। 'आधुनिकता' को अपनाकर अंधविश्वास को जनता में फैलाने का कार्य शुरु हुआ।

सारांशरुप में कहा जा सकता है की, क्या सचमूच छत्रपति शिवाजी महाराज का शासन धोरण का आज राजनीति, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में उपयोग हो रहा है? आज छ. शिवाजी महाराज के प्रगतिशिल विचारों का अनुकरण होना आवश्यक है। तभी उन्होंने 350 वर्षो पहले देखा हुआ स्वतंत्र स्वराज्य का सपना स्वतंत्र भारत में सफल हुआ है ?

संदर्भ ग्रंथ सुची:-

1. कॉ. गुरव धनाजी, "लढून मिळवलेली लोकशाही टिकवण्यासाठी"
2. बाळ प्रकाश/बेडकिहाळ किशोर, "भारतीय राजकिय व्यवस्था"
3. प्रा. माणगावकर एस. बी., "शिवरायांचे प्रशासन च कल्याणकारी राज्य"
4. प्रा. डॉ. महाजन श्रीकृष्ण, "छत्रपती शिवरायांचा स्त्री - विषयक दृष्टिकोन"
5. डॉ. पठान इस्माईल, "शिवरायांची धर्मनीति"